प्रसार कर रहे हैं, अपने अत्याचारों का किला खड़ा कर रहे हैं।

सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान एवं चेतना की ज्योति में एकरूपता है। संसार का कण-कण उसके तीव्रप्रकाश से प्रकाशित है। उसके अन्दर से प्रस्फुटित क्रान्ति की ज्वाला एक जैसा है। सत्य का उज्ज्वल प्रकाश जन-जन के हृदय में व्याप्त है।

प्रकाश की शुभ्र ज्योति का रूप एक है। वह सभी स्थान पर एक समान अपनी रोशनी बिखेरता है। क्रान्ति से उत्पन्न अर्जा एवं शक्ति भी सर्वत्र एक समान परिलक्षित होती है। इसीलिए समस्त जनता का चेहरा एक है।

सम्पूर्ण विश्व में दानव एवं दुरात्मा एकजुट हो गये हैं। दोनों की कार्यशैली एक है। इनके विरुद्ध छेड़े गये युद्ध की शैली भी एक है।

सारांश यह है कि संसार में अनेकों प्रकार के अत्याचार, शोषण तथा दमन समान रूप से अनवरत जारी है। उसी प्रकार जनहित के अच्छे कार्य भी समान रूप से हो रहे हैं। सभी की आत्मा एक है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 23/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

2020 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए

पुस्तक का नाम – दिगंत-भाग-2 पद्य भाग

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी

अ० दि० – पत्र

शीर्षक – जन-जन का चेहरा एक

कवि – गजानन माधव मुक्तिबोध

प्रश्न: – "जन-जन का चेहरा एक" शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर: – 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता में यशस्वी कवि मुक्तिबोध ने अत्यन्त सशक्त एवं रोचक ढंग से विश्व की विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों के बीच एकरूपता दर्शाते हुए मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है। कवि के अनुसार संसार के प्रत्येक महादेश, प्रदेश तथा नगर के लोगों में एक समान प्रवृति पायी जाती है।

विद्वान कवि की दृष्टि में प्रकृति समान रूप से अपनी ऊर्जा, प्रकाश एवं अन्य सुविधाएँ समस्त प्राणियों को वे चाहे जहाँ निवास करते हों, उनकी भाषा एवं संस्कृति जो भी हो बिना भेद-भाव किए प्रदान कर रही है। कवि की संवेदना प्रस्तुत कविता में मुखरित हुई है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कवि शोषण तथा उत्पीड़न की शिकार जनता द्वारा अधिकारों के संघर्ष का वर्णन कर रहा है। वह समस्त संसार में रहने वाली जनता के शोषण के खिलाफ संघर्ष को रेखांकित करता है। इसलिए कवि उनके चेहरे की झुर्रियों को एक समान पाता है।

नदियों की तीव्र धारा में जन-जन की जीवन धारा का बहाव कवि के अन्तर्मन की वेदना के रूप में प्रकट हुआ है

जनता अनेक प्रकार के अत्याचार तथा अन्याय से प्रताड़ित हो रही है। मानवता के शत्रु जनशोषक दुर्जन लोग काली-काली छाया के समान अपने

शेष आगे –

के अनुसार अपने आपको आज्ञा में समर्पित कर देना चाहिए। जयद्रथ की बात को सुनकर श्रीकृष्ण को हँसी आती है और तत्काल ही सूर्य मेघछन्न मेघयुक्त दिखलाई पड़ने लगे। सूर्य की ओर इशारा करके श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि यही समय तुम्हारे प्रण पूरा करने का है। जयद्रथ भी अर्जुन से युद्ध करने फिर तैयार हो जाता। परन्तु देखते ही देखते अर्जुन ने जयद्रथ का सिर पुष्पित एवं मंत्रों से युक्त दिव्य बाण से काट डाला। इससे पांडवों के पक्ष में आनन्द और कौरव पक्ष में सन्नाटा छा जाता। श्री कृष्ण की कृपा से अर्जुन ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करली। इसी के साथ सूर्यास्त हो गया।

सप्तम सर्ग के द्वारा कवि इस खण्ड काव्य का समापन कर देते हैं। सूर्यास्त के उपरांत युद्ध रुक जाता है। दोनों पक्ष के योद्धा अपने-अपने शिविर में लौटने लगे। मार्ग में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध भूमि दिखलाते हुए उसके द्वारा मारे हुए अनेक वीरों को दिखाया और उसकी शौर्य की प्रशंसा करने लगे। तब अर्जुन प्रसन्न होते हुए श्रीकृष्ण की अनेक प्रकार से प्रार्थना करते हैं और अंत में कहते हैं कि हे माधव तुम बड़े ही मायावी और छलीहो। सूर्य छिपाने से पूर्व यदि सचेत कर देते तो मरने की दशा क्यों आती। इस प्रकार श्रीकृष्ण हँसने लगे। इसी अवस्था में वे युधिष्ठिर के पास आ जाते। युधिष्ठिर ने भी श्रीकृष्ण की अनेक प्रकार से वन्दना करते हुए कहते हैं कि हे केशव यह सब आपकी कृपा से सम्पन्न हुआ।

इस प्रकार कवि मैथिलीशरण गुप्त अर्जुन की प्रतिज्ञा पूर्ण करवाकर समस्त देशवासियों को यही सन्देश देना चाहते हैं कि एक दिन अवसर अवश्य आयेगा, जब हम भी अंग्रेजों को परास्त कर भारत माता को स्वतंत्र कराने में सफल होंगे।

डॉ देव चरण प्रसाद 23/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर –

शास्त्री प्रथम खण्ड
अनिवार्य द्वितीय-पत्र
राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्न:- 'जयद्रथ-वध' खण्ड काव्य के षष्ठ और सप्तम सर्ग की कथावस्तु का सारांश लिखें।

उत्तर :- 'जयद्रथ-वध' खण्ड काव्य कुल सात सर्गों में विभक्त है। अन्य सर्गों की भाँति षष्ठ एवं सप्तम सर्ग भी काफी महत्वपूर्ण है। कवि ने षष्ठ सर्ग में सात्यकि और भूरिश्रवा के मध्य रणभूमि में हुए भयंकर युद्ध का वर्णन किया है। दोनों में घमासान युद्ध चल रहा है। युद्धभूमि में दोनों रथहीन होकर पैदल ही आपस में संघर्ष करते हुए एक दूसरे को पराहत करने का प्रयास कर रहे हैं। अवसर पाकर भूरिश्रवा सात्यकि का शीश काटने के लिए अपना हाथ उठाता जैसे ही प्रहार करने का प्रयास करते हैं. ठीक उसी समय गाण्डीवधारी अर्जुन ने अपने तीक्ष्ण बाणों से प्रहार कर भूरिश्रवा का हाथ काट डालते हैं। इसके पश्चात् सात्यकि उसी की तलवार से उसका शीश काटकर वध कर देते हैं। इस घटना के पश्चात् कौरवों की सेना में अर्जुन की निन्दा करते हैं। परन्तु अर्जुन ने यह कहकर कौरवों की सेना को धिक्कारता है। साथ ही साथ अर्जुन उन्हें यह भी स्मरण कराता है कि वीर अभिमन्यु को जिस प्रकार सात महारथियों ने घेर कर उसका वध किया था, वह घटना तुम्हें याद करनी चाहिए। इस प्रकार घोर युद्ध करते हुए पांडव पक्ष को ये तीनों महापराक्रमी मिल जाते हैं और कौरवों के महारथियों के साथ घमासान युद्ध करते हैं। इसी समय श्रीकृष्ण ने अपनी योगमाया का प्रसार किया और सूर्यास्त हो गया। इससे कौरवों की सेना में प्रसन्नता छा गयी। पार्थ अर्जुन विलाप करने लगे। भीम और सात्यकि भी बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़े। इसके बाद जयद्रथ छिपने के स्थान से निकलकर श्रीकृष्ण से बोलता है कि अब अर्जुन को अपनी प्रतिज्ञा

शेष आगे

तथाकथित लोकतंत्र के नाम पर धोबी वाला किस्सा
नर-नारी सम्बन्ध के क्षेत्र में 'राम' को दोषी ठहराता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 23/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० — पत्र

पुस्तक — निबंध माला

शीर्षक — 'रामायण'

लेखक — डॉ० राम मनोहर लोहिया

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :—

प्रश्न :— डॉ० लोहिया ने राम-रावण संघर्ष को लेकर उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय के सम्बन्ध में क्या कहा है ?

उत्तर :— डॉ० राममनोहर लोहिया के कथनानुसार रामायण के राम-रावण संघर्ष को लेकर उत्तर-दक्षिण का कभी-कभी निरर्थक विवाद खड़ा किया जाता है। दोनों में एक-दूसरे के प्रति गलत सन्देश पहुँचाने की चेष्टा की जाती है। सच्चाई यह है कि राम, रावण दोनों ही उत्तर के ही रहने वाले थे यदि रावण उत्तर का नहीं था तो उसके वंशज उत्तर के ऋषि महर्षियों पर अत्याचार कैसे करते थे। राक्षसों का नाश करने के लिए महर्षि विश्वामित्र ने दशरथ से राम और लक्ष्मण को माँग लिया था। लेखक का कहना है कि वरदान पाने के बाद रावण अपने पुराने घर को छोड़कर लंका चला गया था, जिसे वह अपना अभेद्य किला मानता था।

रंग रूप के आधार पर भी उत्तर-दक्षिण में भेद दिखाने की चेष्टा की जाती है। रावण के वंशजों को रामलीलाओं में काला-कलूटा दिखलाया जाता है। परन्तु यह हमें याद रखना चाहिए कि राम और ~~भरत~~ भरत भी साँवले ही थे। अतः उपर्युक्त तथ्यों पर कोई विवाद नहीं होना चाहिए।

प्रश्न :— डॉ० लोहिया के अनुसार मनुष्य का चरित्र कैसा होना चाहिए ?

उत्तर : मानव चरित्र के सम्बन्ध में लेखक का दृष्टिकोण बिल्कुल साफ है। उनका कहना है कि मनुष्य का चरित्र सतत् संघर्षशील, शांत, गम्भीर और सही मार्ग पर चलने वाला होना चाहिए। जिसका चरित्र दृढ़ न होगा वह पुरूषोतम नहीं हो सकता है। वह समझौतावादी हो जायेगा। मनुष्य को दृढ़ निश्चयी होना चाहिए। रामायण में राम को भी दो-तीन हिलते हुए दिखलाया गया है। ~~तथा~~

शेष आगे—